JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

21वीं सदी के दूसरे दशक के उपन्यासों में अस्मितामूलक विमर्श: स्त्री विमर्श और किन्नर विमर्श

जी भवानी
शोध छात्रा
मद्रास विश्व विद्यालय
चेन्नै, तमिलनाडु

प्रसतावना: साहित्य समाज की वास्तविक छवि प्रस्तुत करता है। समाज के हर वर्ग को अपनी आवाज देने का कार्य करता है। हिंदी साहित्य में बीसवीं सदी में विमर्शों का एक नया दौर शुरू हुआ, जिसमें विभिन्न वर्गों की समस्याओं, अनुभवों और दृष्टिकोणों को उजागर किया गया। दूसरे दशक के उपन्यासों में मानव जीवन का बदलते परिवेश का यथार्त चित्रण प्रसतुत होता है। विमर्श का अर्थ है- गहन विचार और सर्वस्व की प्राप्ति की इच्छा, अर्थात किसी समस्या को एक नई दृष्टि से देखना और उस पर पुनर्विचार करना। इस आलेख में अस्मितामूलक विमर्श के अंतर्गत स्त्री विमर्श और किन्नर विमर्श के महत्व तथा उनके सामाजिक दृष्टीकोण का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

बीज शब्द: विमर्श, अस्मितामूलक विमर्श, स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श ।

विमर्श: किसी समस्या को एक दृष्टि से नहीं देखकर उसे दूसरी दृष्टि से देखने की कोशिश करना है, मानसिक दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओंता को समाहार कर देखना है। मानवीय संदर्भों में निष्कर्ष प्राप्त करना, स्पष्ट रूप से विमर्श है, किसी निश्चित विचार पर फिर से विचार करने की प्रक्रिया है। साहित्य के विविध विमर्शों में दलित, स्त्री, आदिवासी, अल्पसंख्याक किन्नर, पर्यावरण विमर्श आदि की रचनाएं आ रही हैं। अस्मितामुल्क विमर्श भी इस श्रृंखला में है।

अस्मितामूलक विमर्श: अस्मितामूलक विमर्श एक सामाजिक और साहित्यिक अवधारणा है, जो समाज के विभिन्न वर्गों और समूहों के अनुभवों, समस्याओं और दृष्टिकोणों को उजागर करने का प्रयास करती है। यह विमर्श असमानता, शोषण और अन्याय को समझने और समाधान खोजने पर केंद्रित होता है। अस्मिता (identity) से संबंधित विषयों को अस्मितामूलक विमर्श में शामिल किया जाता है, जैसे समाज के वंचित और दमित वर्गों के अनुभव और उनकी स्थिति। यह विमर्श उन वर्गों की आवाज़ को साहित्य में स्थान देने के लिए उत्पन्न हुआ है, जो समाज में अक्सर उपेक्षित रहते ह

स्त्री विमर्श: स्त्री विमर्श में स्त्री की अस्मिता, उसके अधिकारों और सामाजिक स्थिति पर विचार किया जाता है। यह विमर्श स्त्री के शोषण, उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ है, और उसका उद्देश्य स्त्री को समानता का अधिकार और समाज में

सम्मानजनक स्थान दिलाना है। स्त्री विमर्श न केवल महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को चुनौती देता है, बल्कि उनके अस्तित्व की पहचान की भी लड़ाई है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्त्री के चरित्र को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जहां नारी का संघर्ष, उसकी स्वायत्तता और पहचान को दर्शाया गया है। उदाहरण के रूप में, 'ख्वाहिशों के खांड ववन' उपन्यास में सुनीता का चरित्र दिखाता है कि किस प्रकार एक महिला समाज में अपनी पहचान और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है। इसके अलावा, 'एक रिश्ता बेनाम सा' उपन्यास में स्त्री की आक्रोश और संघर्षात्मक स्थिति को चित्रित किया गया है, जहां नारी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती है। 21वीं सदी में स्त्री विमर्श को केवल स्त्री की मुक्ति तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह समग्र मानवता की मुक्ति के लिए आवश्यक शर्त है। यह विमर्श इस बात को साबित करता है कि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा समाज के समग्र कल्याण के लिए आवश्यक है।

योगिता यादव रचित ख्वाहिशों के खांडववन उपन्यास में स्त्री की संघर्षमय जीवन प्रस्तु होतता हे। इस उपन्यास का नारी सुनीता अपनी परिवार और गांव को विकसित करने के लिए पंचायत चुनाव में लड़ना चाहती है। वह गांव की महिलाओं को हर दिन परोपकारिता व्यवहार में सामाजिक विनिमय की उम्मीद करती है। वह किसी को मदद करके उसका प्रेम पाना चाहती है। इससे किसी के लिए कोई परोपकार करके सहयोग और सहायता की उम्मीद करती है। वह अपने गाँव की लड़कियों को मदद करना चाहती है। तब वह उनसे कहती है कि, **"मेरे लिए बस एक ही उद्देश्य था कि यह जो बिखरी हुई है, इनकी कराहें है एक साथ हो जाए। वह दूसरे से खुलकर बात करें। एक दूसरे की मेहनत पर पलीता न लगाएं, बल्कि एक दूसरे को आगे बढ़ने में मदद करें।"**[1] एक और संदर्भ में सुनीता विवाह के प्रति अपनी दृढ़ मानसिकता को व्यक्त करती है। आधुनिक युवा में मानसिक दृढ़ता है। वे निडर एवं निर्भीकता से अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं। इस उपन्यास की युवती सुनीता ने अपनी आत्मविश्वास से विकसित दृढ़ मानसिकता को इस प्रकार व्यक्त करती है कि**मैं अकेले बिना शादी" , के भी रह सकती हूँ, पढ़लिख रही हूँ-, खुद कोई नौकरी करूँगी, आप लोगों पर बोझ नहीं बनूँगी।"**[2] इससे शिशित नारी की स्वावलंबन और उत्पन्न दृढ़ मानसिकता इस कथन में प्रस्तुत होती है।

भगवंत अन्मोल रचित उपन्यास 'एक रिश्ता बेनाम सा' आज्ञाकारी पुत्री की मानसिक स्थिति प्रस्तुत होतीं है। जब आख्या की प्यार के प्रति पिता बहुत गुस्सा होता है तब वह पिता की बात मानकर इस प्रकार कहते हैं कि,**"आपको निराश करके वह आपको दुख देकर मैं अपनी खुशियों नहीं खरीदना चाहती यदि आपको उसे लड़के से संबंध न रखने में खुशी मिलती है तो बेशक मैं उसे आज से संबंध तोड़ दूंगी।"**[3] इस कथन से नारी की परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी भाव एवं पिता के प्रति सहानुभूति भाव प्रस्तुत होती हौ। मुसाफिर केफ उपन्यास में नारी की विकासशील एवं नारीवाद भाव प्रस्तुत होता है। इस उपन्यास का चंदर शादी के लिए लड़की को मिलने आता है। वह कॉफी हाउस में लड़की के लिए इंतजार करता है। तब पास में एक युवती की आवाज तेज से सुनाई पड़ी। वह आक्रोश से बंदा से इस प्रकार कहती हैं कि,

"**तुम लोग समझते क्या हो? तुम लोगों को शादी के बाद जब लड़की से केवल बच्चे पलवाने हैं तो वर्किंग वुमन चाहिए ही क्यों?**"[4] यह कन से नारी की उच्छृंखल मानसिकता तथा नारीवाद विचार लेखक के द्वारा चित्रित किया गया है।

दिव्य प्रकाश दुबे रचित अक्टूबर जंक्शन उपन्यास में नारी की अहंकार भाव का चित्रण होती है। इस उपन्यास में युवती चित्रा महत्वाकांक्षी है। वह उसको सब कुछ चाहिए जीवन में सब कुछ चाहिए। वह अपने दोस्त सुदीप की तरह सेलिब्रिटी बनना चाहती हैं तब उसकी आशावादी मानसिकता को सुदीप से इस प्रकार व्यक्त करती हैं कि,"**मैं चाहती हूं कि मुझे हर कोई पहचाने, मेरे अपने कमाए हुए खूब पैसे हों, मेरी किताब में लाखों में बिकें। हर जगह मुझे बोलने के लिए बुलाया जाए। न्यूज़ पेपर में फोटो आए मेरी। न्यूज़ रूम में मुझे बुलाया जाए। इंशार्ट चित्रा पाठक कोई अवाईड नहीं कर पाए।**"[5] इस कथन के द्वारा उसकी मन का विकासशील मानसिकता का भी पहचान मिलता है।

किन्नर विमर्श : किन्नर विमर्श एक अत्यंत महत्वपूर्ण विमर्श है, जो किन्नरों की स्थिति और उनके अधिकारों पर चर्चा करता है। यह विमर्श किन्नरों के शोषण, उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ है और उनका उद्देश्य किन्नरों को समानता और सम्मान दिलाने के लिए समाज में बदलाव लाना है। किन्नर समाज का एक हिस्सा होने के बावजूद उन्हें न केवल समाज में अपमानित किया जाता है, बल्कि उन्हें रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएं और सामान्य नागरिक अधिकारों से भी वंचित किया जाता है। किन्नरों के जीवन की त्रासदी, उनके भिक्षावृत्ति और वेश्यावृत्ति में मजबूरी के कारण गिरने की समस्या, और उनके शारीरिक तथा मानसिक दर्द को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। 'जिंदगी 50-50' उपन्यास में किन्नर पात्र हर्ष की शारीरिक और मानसिक पीड़ा को दर्शाया गया है, जो समाज के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण से संघर्ष कर रहा है। उनका यह कथन, **"आपने हमेशा मेरे शारीरिक पक्ष को ही देखा... मेरी कमजोरी ही आपको दिखी...समाज के प्रभाव करते-करते आप यह भी भूल गए हैं कि मैं भी एक इंसान हूं...आपके स्नेह प्यार की भूखी हूं ... "**[6] समाज में उनके प्रति असंवेदनशीलता और भेदभाव को उजागर करता है।

किन्नरों के जीवन में सामाजिक बहिष्करण, मानसिक तनाव और शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद, उन्हें पहचान और अस्तित्व की तलाश रहती है। किन्नर विमर्श का उद्देश्य समाज में उनके अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें मुख्यधारा में समाहित करना है। आजकल भारतीय समाज में और साहित्य में किन्नर की समस्या एक सामाजिक समस्या के रूप में उबड़कर आ रहे हैं। अपना हक वह मांग रहा है राजनीति में और चुनाव में भाग लेने का अधिकार है। उन्हें मिल रहा है समझ में जीते जी उन लोगों को बहुत सी यातनाएं सहनी पड़ती हैं। भारतीय समाज एवं साहित्य में तृतीय लिंगी विमर्श किन्नर समाज के बारे में न केवल जानकारी देती हैं। बल्कि उनके उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण विमर्श सजाती हैं। इन तृतीय पंक्तियों को और भी कई नाम से पुकारा जाता है जैसा कि हिजड़ा, किन्नर, ख्वाजा, उबयलींगी शिखंडी आदि।

संविधान में इन्हें इंटरसेक्सुअल और ट्रांसजेंडर के रूप में पहचान गया और उनकी पहचान को थर्ड जेंडर में ट्रांसजेंडर श्रेणी में रखा गया। वे अपना पेट पालने के लिए नुक्कड़ छोड़ा है, दोनों के पर रेलवे में भी भीख मांगनी पड़ती हैं या इसी भी गुजर ना हो तो वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इनके जिस्मफरोशी दल-दल में गिर जाने से एड्स पीड़ितों की संख्या बढ़ रही है। आखिर उनकी पीड़ा और दर्द को कोई सुना समझने तथा महसूस करना नहीं चाहता। क्योंकि उनके अस्तित्व को नकार दिए जाने के कारण समाज से लेकर सरकारों तक उनकी आर्थिक जरूरत के बारे में नहीं सोचते। इसका चित्रण है भगवंत अनमोल द्वारा रचित जिंदगी 50-50 में प्रस्तुत होता है। इस उपन्यास में किन्नन के साथ किया जा रहे दुर्व्यवहार का चित्रण और साथ उसका समाधान भी निकाला है। इस उपन्यास का युवा किन्नर हर्ष शारीरिक पीड़ा एवं मानसिक पिड़ाओं के साथ ग्रस्त होती हैं। उसकी तनाव ग्रस्त स्थिति को इस प्रकार रहती है कि,"**किन्नर होना इतना बड़ा अभिशाप क्यों है बस मेरा अधूरापन ही तो ना कैसे कैसे पाल आए इस शरीर में जब डूबता सब शाह जी शरीर का लोग मजाक उड़ाते हैं उसे ही रात को मन बहलाने का जरिया बना लेते हैं मेरे शारीरिक अस्तित्व में दोहरापन है लेकिन उसे तथाकथित समाज के व्यक्तित्व के दूसरे पान पर में थूकती हूं।**"[7]

किन्नर जीवन त्रासदी होता है परिवार में किन्नर का स्त्रैण स्वभाव के कारण घर में उन पर अपेक्षित व्यवहार से वे माता पिता से दूर होते हैं। लेकिन उनके मन में वे हमेशा दुख को झेलते हैं। अपने इस स्थिति को खोसती है। इसका चित्रण है भगवंत अनमोल द्वारा रचित जिंदगी 50-50 में प्रस्तुत होता है। इस उपन्यास में किन्नर हर्षा परिवार से दूर मुंबई जाती है। वहां उसकी त्रासदी जीवन को चिठ्टी के द्वारा अपनी भाई अनमोल को इस प्रकार व्यक्त करती हैं कि, "**मैं जो दिखता हूं वह हूं नहीं और जो हूं वह दिखता नहीं।**"[8] इससे हर किन्नर के मन में यह सवाल उठता रहता है कि मैं कौन हूं? मेरा अस्तित्व क्या है? मेरा वजूद क्या है? क्या इन सवालों के जवाब पाते पाते यह जीवन भी जाएगा क्या यह सब भी है समाज इन तृतीय लिंगी को अपने में समाहित नहीं कर सकता इन्हीं सवालों की खोज करता यह शोध आलेख पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं। प्रस्तुत उपन्यास जिंदगी 50-50 से यह चेतना होती है कि हमें अपने नजरिए को बदले जिस तरह सूर्या के परिवार ने बदली इन तृतीया लिंगी को पारिवारिक तथा सामाजिक सहयोग प्राप्त हो तो वे स्त्री पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चल सकते हैं। यह सौभाग्य जिंदगी 50-50 उपन्यास में सूर्या को प्राप्त हुआ पर असल में किननर के सामने यह एक प्रश्न बना हुआ है।

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा उपन्यास की प्रासंगिकता किन्नर समुदाय की आदत होती है और महंगी चित्रण में है जो लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देता है। संवेदनशील भावना को जागृत करता है यह उपन्यास विनोद उर्फ देने की कहानी के माध्यम से कीनन के सामाजिक बहिष्कार पहचान के संघर्ष और मानवीय गरिमा के लिए उनके संघर्ष को उजागर करता है। यह उपन्यास कीनन के त्रासदी यथार्थ को शामिल करता है। यह उपन्यास समाज की मानसिकता को जिन जोड़ता है अपने वर्ग के प्रति राजनीतिक संवेदन शून्यता पर सबल सवाल उठता है तो अपने समुदाय के मानसिक अनुकूलन की भी

कहां में जाने और उसे बदलने के लिए प्रेरित भी करता है इस संदर्भ में विनोद का यह वाक्य अतयंत महत्वपूर्ण है **"किन्नरों के धड़ के नीचे लिंग ना सही, धड़ के ऊपर मस्तिषक भी नहीं है, यह कैसे सोच लिया आपने?"**[9]

निष्कर्ष: अस्मितामूलक विमर्श में स्त्री और किन्नर विमर्श को विशेष स्थान प्राप्त है। इन विमर्शों के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानता, शोषण और भेदभाव के खिलाफ एक गहरी बहस की जा रही है। स्त्री विमर्श का उद्देश्य महिलाओं को समानता और सम्मान दिलाना है, जबकि किन्नर विमर्श का मुख्य लक्ष्य किन्नरों को उनके एअधिकार और सम्मान दिलाने के लिए समाज में बदलाव लाना है। इन दोनों विमर्शों ने साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस कराया है। अस्मितामूलक विमर्श समाज के हर वर्ग के अनुभव और दृष्टिकोण को सामने लाकर उनके अस्तित्व और पहचान के अधिकार की रक्षा करता है। यह विमर्श समाज के प्रति एक गहरी संवेदनशीलता और जागरूकता उत्पन्न करता है, जो अंततः सामाजिक सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. योगिता यादव, ख्वाहिशों के खांडववन, 2017, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002,पृ.62
2. योगिता यादव, ख्वाहिशों के खांडववन, 2017, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002,पृ.9
3. भगवंत अनमोल, एक रिश्ता बेनाम सा, 2013, साहित्य संचय, दिल्ली 110094,पृ.120
4. दिव्य प्रकाश दुबे, मुसाफिर केफ, 2016, हिंदी युग्म, दिल्ली 110091, पृ11
5. दिव्य प्रकाश दुबे,अक्टूबर जंक्शन 2017, राजपाल एंड संस दिल्ली 110091,पृ.46
6. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017 राजपाल एंड संस, दिल्ली 110006, पृ.207
7. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017 राजपाल एंड संस, दिल्ली 110006, पृ.207
8. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017 राजपाल एंड संस, दिल्ली 110006, पृ.117
9. चित्रा मुदगल, पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, 2016, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, पृ.203.